*नेहरू बाल पुस्तकालय*

# बर्फ के आदमी

सूर्यनाथ सिंह

चित्रांकन : सौरभ पांडे
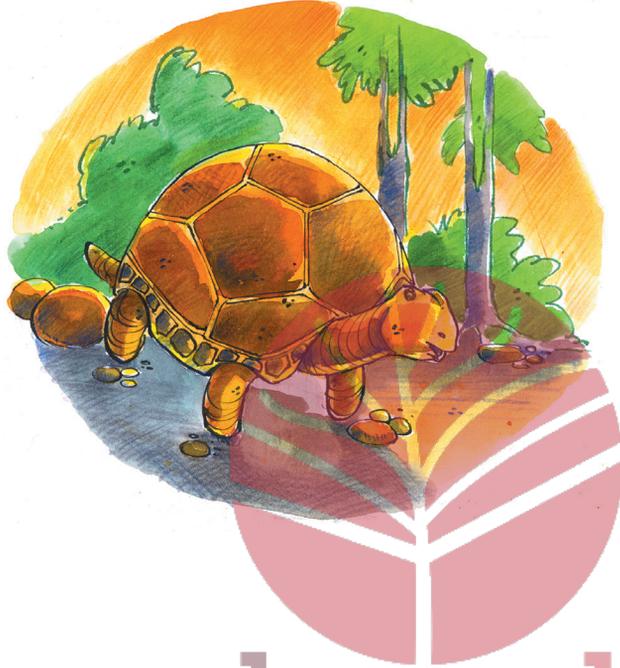
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
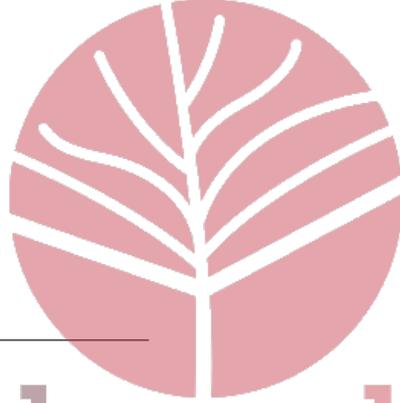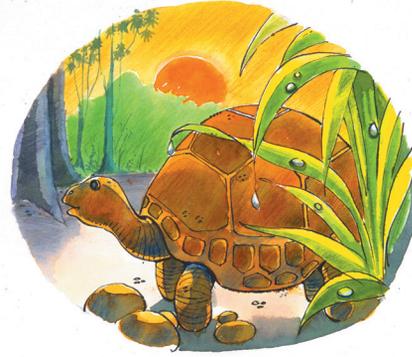
# एक

मौसम काफी सुहावना हो गया था। रात को देर तक तेज बारिश होती रही थी। सुबह से हवा भी चल रही थी, इसलिए पिछले कुछ दिनों से जो गर्मी और उमस की वजह से बेचैनी बनी हुई थी वह समाप्त हो गयी थी। हालांकि बारिश बंद हुए काफी देर हो गयी थी, सड़कों के किनारे कहीं-कहीं छोटे-बड़े गड्ढों में जरूर कुछ-कुछ पानी भरा हुआ था, पर सड़कें बिल्कुल साफ थीं। सूरज निकल आया था, लेकिन आसमान में बादलों का जमावड़ा अब भी बना हुआ था। इसलिए धूप तीखी नहीं थी, सूरज उन बादलों में लुकता-छिपता कभी-कभी बाहर निकल कर पूरी तरह चमक जाता था। पेड़-पौधों पर जमी धूल और गर्द धुल गयी थी। उन्हें देख कर लगता था मानो पेड़ भी मौसम के बदलने से राहत महसूस कर रहे हैं। एक दिन पहले जब तन्मय अपने मम्मी-पापा के साथ सरिस्का अभयारण्य देखने के लिए घर से रवाना हुआ था तो उसे अंदाजा भी नहीं था कि उसकी यह यात्रा इतनी सुखद होगी।

एक तो कल की यात्रा की थकान और दूसरे मौसम ठंडा होने के कारण सुबह तन्मय और उसके मम्मी-पापा की नींद देर से खुली। होटल से नाश्ता करके सरिस्का के लिए निकलते-निकलते दोपहर हो गयी थी। उन्होंने होटल से बाहर निकल कर

किराए पर टैक्सी ली और सरिस्का पहुंच गये। तन्मय उत्साहित था कि उसे तरह-तरह के जंगली जीव खुले में आजादी से घूमते देखने को मिलेंगे। दिल्ली और कोलकाता के चिड़ियाघरों में वह जानवरों को देख चुका था, मगर उन्हें पिंजरों में बंद देख कर उसे अच्छा नहीं लगा था।

तन्मय को हमेशा से यही लगता था कि जीव-जंतुओं को उनके स्वाभाविक वातावरण में रखा जाना चाहिए। यह क्या कि पिंजरों में बंद करके उन्हें अपनी मर्जी से भोजन देते जाओ। मौसम के असर से बचाने के लिए कूलर और हीटर लगा दो। बीमार पड़ें तो डॉक्टर को बुला कर इंजेक्शन लगवा दो। भला कोई जानवर अपने इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाता है! प्रकृति ने उन्हें यह गुण दिया है कि जब भी उन्हें कोई तकलीफ होती है, उसका निदान वे खुद कर लेते हैं। यह तो आदमी है जो उन्हें पिंजरों में रख कर सोचता है कि अपने हिसाब से उनकी जीवनचर्या बदल लेगा। आदमी की इन्हीं कोशिशों की वजह से ज्यादातर पालतू जानवर बीमार पड़ते हैं और उन्हें डॉक्टर के पास ले जाने की जरूरत पड़ती है। अगर उन्हें आजाद छोड़ दिया जाए तो उनके अनेक रोग अपने आप दूर हो जायेंगे।

उसे सोच कर हंसी आयी कि जब वह चार साल का था तो आगरा जाते हुए रास्ते में एक ढाबे पर एक आदमी पिंजरों में तोते और दूसरे कुछ पंछी बेचता हुआ मिला था। उसने पापा से जिद की थी कि वे पिंजरों के पंछी उसके लिए खरीद दें। पापा ने एक पिंजरा खरीद कर तन्मय को दे दिया था। तन्मय ने पिंजरा हाथ में लेते ही उसकी खिड़की खोल दी थी और तोतों को बाहर निकल कर उड़ जाने दिया था। उसकी इस हरकत पर उसके मम्मी-पापा कुछ नाराज भी हुए थे। फिर जब उसने दूसरे पिंजरे की जिद की थी तो उन्होंने खरीदने से मना कर दिया था। तन्मय तोते उड़ाने की अपनी हरकत को यह कह कर ठीक साबित करने की कोशिश करता रहा कि पंछियों को आजाद रहने देना चाहिए और उन्हें उसी रूप में देखने का आनंद लेना चाहिए। यह क्या कि अपने सुख के लिए उन्हें कैद करके घर के दरवाजे पर टांग दिया जाये और कुछ अजीब से शब्द बोलना सिखाया जाये। मम्मी-पापा ने दलील दी
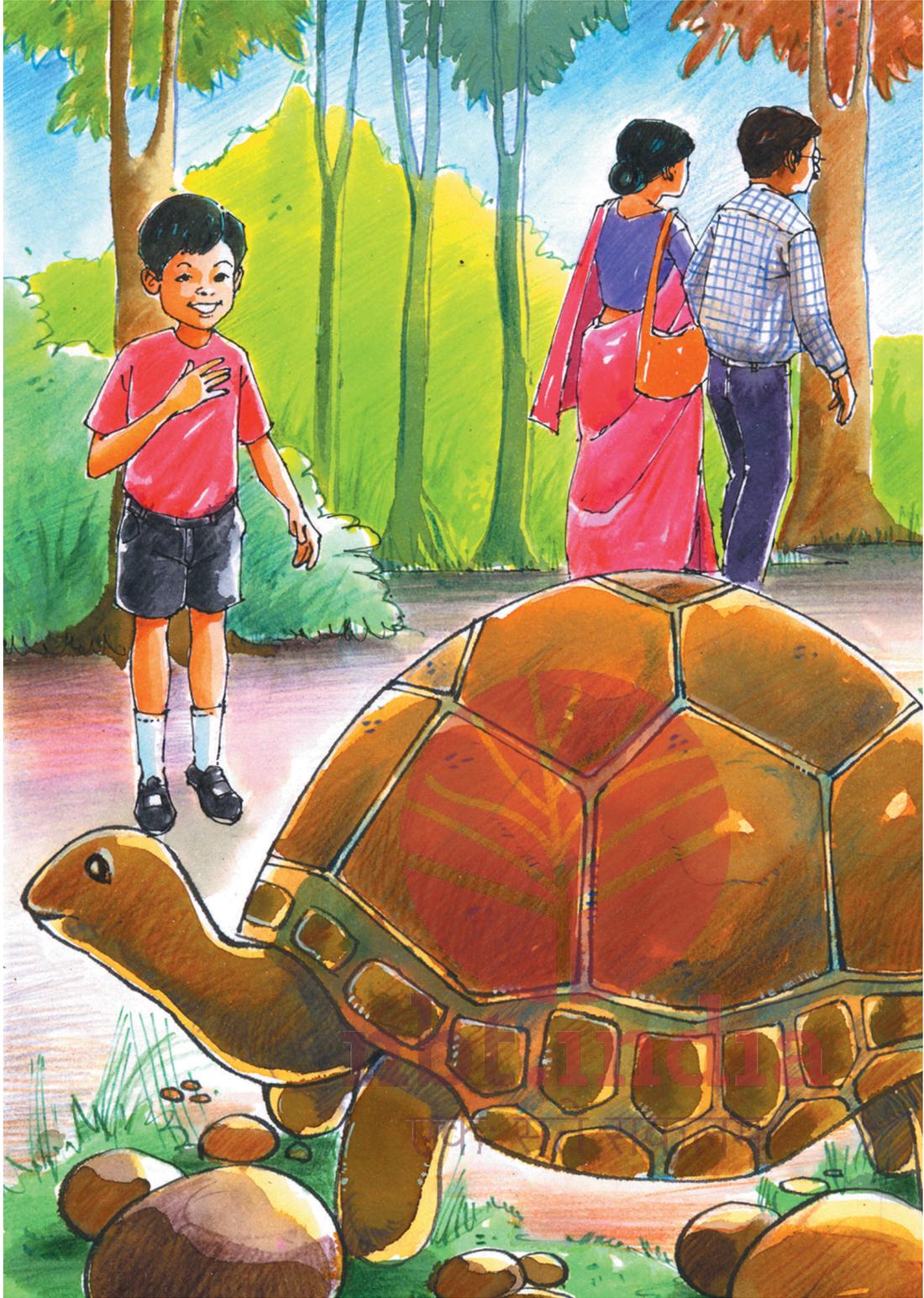
थी कि वह पिंजरे बेचने वाला फिर से उन तोतों को पकड़ लायेगा और किसी दूसरे आदमी को बेच देगा। तन्मय की इस हरकत पर उसके मम्मी-पापा काफी दिनों तक उसे चिढ़ाते रहे थे।

सरिस्का में घूमते-घूमते काफी देर हो गयी थी। वह है भी इतना बड़ा कि पैदल घूम कर एक दिन में पूरा देख पाना मुश्किल है। शाम होने को आयी। वे घूमते-घूमते थक गये थे। वापस गेस्ट हाउस के लिए चल पड़े। लौटते वक्त तन्मय की नजर पार्क की सड़क के किनारे बने धातु के एक बड़े से कछुए पर पड़ी। उसकी आंखें चमक उठीं। कछुआ काफी सुंदर बना हुआ था। पर्यटन स्थलों पर इस तरह की मूर्तियां लगाना आम है। तन्मय थका तो था ही, सोचा कुछ देर कछुए की पीठ पर बैठ कर आनंद लूं। उसके मम्मी-पापा चलते-चलते बातों में व्यस्त थे। वह उन्हें बिना बताए चुपके से जाकर कछुए की पीठ पर बैठ गया।

यह क्या, तन्मय के बैठते ही कछुए में हरकत शुरू हो गयी। वह जब तक अंदाजा लगाता, कछुए की पीठ का खोल खुला और तन्मय को अपने भीतर कर लिया। उसे पता भी नहीं चला कि कछुए की कठोर पीठ कैसे एक गद्देदार कुर्सी में बदल गयी। हवाई जहाज में बांधी जाने वाली पेटी की तरह उस कुर्सी के हत्थे से एक पेटी निकली और तन्मय को लपेट लिया। कछुए का कवच बंद हो चुका था। उसे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वह आसमान में उड़ रहा है। मगर ऐसा होता तो कम से कम कछुए के भीतर से किसी इंजन की आवाज तो आती। धत्! यह उसका भ्रम है, उसने सोचा। वह कछुए के भीतर लगी चीजों को देखने लगा। भीतर एक मद्धिम सी उजास भरी थी। भीतर का वातावरण बाहर के मौसम से काफी बेहतर था। सांस लेने में काफी सुकून मिल रहा था। जरूर कछुए के भीतर ए.सी. लगा है, उसने सोचा। भीतर उसने गर्दन घुमा कर ऊपर-नीचे, अलग-बगल सब तरफ देखा। मानो वह किसी छोटे से तारामंडल में बैठा हो। वैसी ही गोल छत, दीवारें गोलाई लिए हुए। मगर बैठने की जगह सिर्फ एक आदमी की।



तन्मय ने सोचा, जरूर यह कोई खिलौना है। इसके भीतर बैठ कर कुछ न कुछ

खेल खेला जाता होगा। उसने आसपास नजरें दौड़ा कर देख लिया, पर ऐसा कोई बटन उसे नहीं दिखाई दिया, जिसे दबाकर कोई खेल खेला जा सके या बाहर निकला जा सके। वह काफी देर तक इधर-उधर किसी ऐसे बटन की तलाश करता रहा। उसका पूरा शरीर पेटी से जकड़ा हुआ था, इसलिए उसका हिल-डुल पाना भी मुश्किल था। उसने मन ही मन सोचा कि शायद यह पूरा खिलौना ही ऑटोमेटिक हो और खेल अपने आप शुरू होता हो और खेल खत्म होने पर कछुए का कवच भी अपने आप खुलता हो। यह सोच कर वह चुपचाप बैठ गया।

काफी देर हो गयी। कछुए के भीतर कोई खेल शुरू नहीं हुआ। अब वह घबरा

उठा। सोचा, कहीं ऐसा न हो खिलौने में कोई खराबी आ गयी हो और इसने काम करना बंद कर दिया हो। कोई खिड़की भी नहीं थी, जिससे आवाज देकर या इशारा करके वह मम्मी-पापा को बता सके। उसने जोर से आवाज लगाई। वह आवाज बाहर पहुंची या नहीं, उसे नहीं पता, पर कछुए के भीतर से एक आवाज जरूर आयी। पता नहीं किस भाषा में थी। वह समझ नहीं पाया, लेकिन इतना अंदाजा जरूर लगा लिया कि उसे कोई हिदायत दी जा रही है। उसने एक बार फिर पहले जैसे ही जोर से आवाज लगाई। कछुए के भीतर से फिर कोई आदेश देने जैसी आवाज आयी। तन्मय समझ नहीं पाया। उसे हैरानी हुई कि ऐसी भाषा में हिदायतें क्यों दी जा रही हैं। इस मशीन में हिंदी में न सही, अंग्रेजी में तो सूचनाएं या हिदायतें दी जानी चाहिए।

फिर उसने सोचा, जरूर इसमें ध्वनि को पकड़ कर संचालित होने की तकनीक डाली गयी है। संभव है भाषा चुनाव के लिए भी कोई ध्वनि संकेत हो। उसने किसी पत्रिका में पढ़ा था कि लंदन में एक ऐसा तारामंडल बना है जिसमें बैठने पर ऐसा अनुभव होता है कि जैसे आदमी ग्रहों पर सैर करते हुए उन्हें देख रहा है। वह ध्वनि संकेतों के आधार पर काम करता है। ऐसे खिलौने तो आम हो गये हैं जो ध्वनि संकेतों को पहचान कर काम करते हैं। तन्मय ने तेज-तेज स्वर में तरह-तरह की आवाजें निकालनी शुरू कर दीं   हू...हा...हो...हो...हो...चिंयां चांऊं-चांऊं...पिंग पांग पूं...अलंफू शलंफू...। मगर कछुए के भीतर कोई हरकत नहीं हुई। उसने सोचा शब्दों की बजाय सिर्फ ध्वनियां निकाली जायें। हो सकता है इससे कोई हरकत समझ में आये। वह कभी जीभ से टुर्र टुक...टुर्र्रर्र तो कभी होठों से पुर्र्रर्र...फुर्र्रर्र जैसी आवाजें निकालने लगा। पर कोई सफलता हाथ नहीं लगी। सोचा सिमसिम खुल जा जैसा कोई पासवर्ड न डाला गया हो। उसने तरह-तरह के वाक्य बोलने शुरू कर दिए   स्टार्ट द गेम...ओपन द डोर...चिंग चांग चिंचिं...। मगर फिर भी उसे कामयाबी नहीं मिली।

तन्मय के मन में विचार आया कि कहीं किसी ने उसका अपहरण तो नहीं कर लिया है। शायद मम्मी-पापा से फिरौती मांगने के लिए किसी ने उसे चुराने के लिए

यह चाल चली हो।'...अगर किसी ने ऐसा करने की कोशिश की होगी तो मैं उसे ऐसा सबक सिखाऊंगा कि वह भी उम्र भर याद रखेगा। मुझे ताइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट ऐसे ही थोड़े मिली है। पिछले दिनों जब बच्चों के अपहरण की घटनाएं बढ़ी थीं तो स्कूल में एक पुलिस अधिकारी को बुलाया गया था। उन्होंने बताया था कि जब कोई अपहरण कर ले तो क्या-क्या करना चाहिए। वे सारी बातें मुझे याद हैं।' फिर उसने अपने सिर को झटका। धत्, वह भी कैसी बेकार बातें सोचने लगा है। भला अपहरण करने वाला इतनी आधुनिक मशीन क्यों इस्तेमाल करने लगा? यह मशीन लाखों की आती होगी। किसी गुंडे-बदमाश के लिए बच्चा चुराने के लिए तो एक कार ही काफी है।

उसने सोचा, शायद इस मशीन का ऑपरेटर इसमें कोई पासवर्ड फीड कर कहीं चला गया है। वह आयेगा तो जरूर इसे खोलेगा। मम्मी-पापा को भी पता चल ही चुका होगा और वे इसे खुलवाने की कोशिश कर रहे होंगे। बेकार में परेशान होने से अच्छा है चुपचाप बैठे रहो कछुए का खोल खुलेगा तो बाहर निकलेंगे। तब तक ए.सी. का आनंद लो, बाहर निकल कर तो गरमी ही झेलनी पड़ेगी। तभी कछुए का कवच खुला। जिस कुर्सी पर वह बैठा था वह थोड़ा ऊंचा उठी और उसकी बेल्ट खुल गयी। तन्मय ने अपने चारों ओर नजरें घुमा कर देखा। वह एक बड़े से कांच के घर में था। इतना बड़ा घर तो उसने कभी देखा ही नहीं था। एक बिल्कुल सफेद, बर्फ की सी आकृति आयी और तन्मय की बगल में एक कुर्सी लगा कर खड़ी हो गयी। वह कछुए के खोल से बाहर निकला और दूसरी कुर्सी के हवाले हो गया। उस कुर्सी से भी एक बेल्ट अपने आप बाहर निकली और तन्मय को जकड़ लिया।
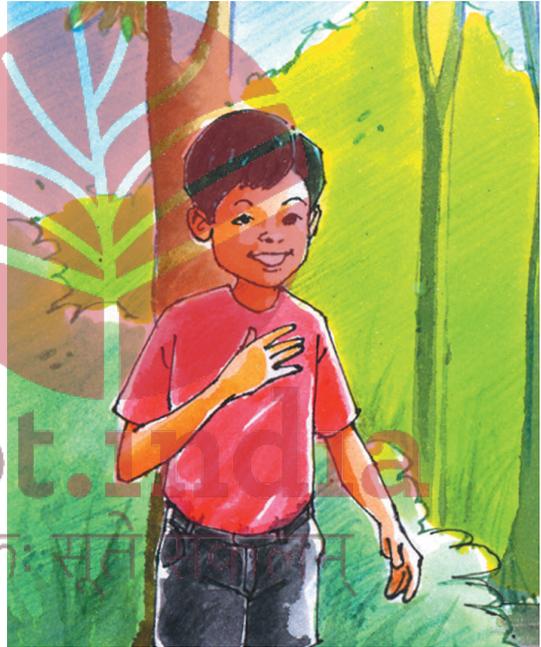
# दो

तन्मय समझ नहीं पाया कि वह कहां आ गया है। लगता है कि अपहरण वाला शक सही है, उसने सोचा। वह अपहरणकर्ताओं के चंगुल से बचने के उपाय सोचने लगा। उसने उस आदमी को गौर से देखा। इतना सफेद आदमी उसने कभी नहीं देखा था। आदमी है भी या नहीं, उसे शक हुआ। वह आदमी की शक्ल वाला बर्फ का बना हुआ चलता-फिरता पुतला लग रहा था। उसने पैरों में बर्फ पर स्केटिंग करने वाली पट्टियों जैसे जूते पहन रखे थे। सिर पर एक छोटे हेलमेट जैसा टोप था। बाकी शरीर पर कपड़े थे या नहीं, तन्मय के लिए पहचान करना मुश्किल था। अगर थे भी तो जैसे बर्फ के ही बने थे। उस बर्फ के आदमी ने अपने हेलमेट में लगे एक बटन को दबाया, एक लाल बत्ती जली और वह आदमी कुछ बोलने लगा। शायद किसी से बात कर रहा था। शायद अपने साथियों से संपर्क कर रहा होगा। वह पता नहीं किस भाषा में बात कर रहा था, तन्मय उसकी बातें समझ नहीं पा रहा था।

तन्मय को अचानक तेज ठंड का अनुभव हुआ। वह ठिठुरने लगा। उसके दांत किटकिटाने लगे। ठंड इतनी तेज थी कि वह आगे कुछ सोच-समझ भी नहीं पा रहा था। उसने कांपती आवाज में कहा, ''मुझे ठंड लग रही है।'' उस पुतले में कुछ

हरकत तो हुई, मगर शायद वह तन्मय की बात समझ नहीं पाया। उसने कुर्सी ठेलते हुए एक दीवार के सामने ले जाकर खड़ी कर दी। दीवार पर कई बड़ी टेलीविजन स्क्रीन लगी थीं। नीचे कांच के बैंचों पर लाल, नीले, पीले, काले असंख्य बटन लगे थे। कुछ में बत्तियां जल रही थीं। कुछ टीवी स्क्रीनों पर ग्राफिक जैसे संदेश आ रहे थे। शायद यह इनका कंट्रोल रूम हो, तन्मय ने सोचा। मगर उसे इतनी तेज ठंड लग रही थी कि उसका सारा ध्यान इस ठंड से बचने की तरफ लगा हुआ था। किस तरह वह अपनी बात उस बर्फ के पुतले को समझाए और जल्दी से जल्दी गरमी का कोई उपाय किया जाये।

तभी तन्मय ने कांच की दीवारों के बाहर देखा कि विभिन्न दिशाओं से पहले वाले की तरह ही चार-पांच बर्फ के पुतले तेजी से फिसलते हुए उसी की तरफ आ रहे हैं। विचित्र बात यह कि वहां न कोई सड़क थी, न गाड़ी। सभी के पैरों में स्केटिंग के जूते लगे थे और वे कारों से भी तेज भागे आ रहे थे। पलक झपकते ही बर्फ के पांच पुतले उस कांच के घर में हाजिर हो गये। उनमें से यह पहचान करना मुश्किल था कि कौन पुरुष है और कौन महिला। तन्मय ने हाथों की उंगलियों की बनावट और आवाज से पहचाना कि नये आने वालों में से दो महिलाएं थीं। तन्मय ठंड से परेशान था। वह जोर से चिल्लाया, ''ठंड लग रही है। मुझे जल्दी से कंबल दो।''

बर्फ के पुतलों ने एक दूसरे की तरफ आश्चर्य से देखा। फिर उनमें से एक ने कांच की एक मशीन से हेलमेटनुमा टोपी निकाली और तन्मय के सिर पर रख दी। बिल्कुल वैसी ही टोपी जैसी उन बर्फ के पुतलों ने पहन रखी थी। फिर एक ने दीवार पर लगी कंप्यूटर जैसी मशीन में से एक तार बाहर निकाल कर टोपी के एक हिस्से में लगा दिया। दीवार पर लगी एक स्क्रीन पर कुछ चित्रनुमा ग्राफिक उभरने शुरू हो गये। एक पुतले ने की-बोर्ड के जरिए कुछ जानने की कोशिश शुरू कर दी। शायद उनकी लिपि में कुछ लिखित संदेश आ रहे थे। चार-पांच मिनट बाद उसने बाकी पुतलों से कुछ कहा और उनमें से दो ने झटपट उसी कांच की मशीन से तार खींच कर तन्मय के दोनों हाथ-पांवों की उंगलियों में चिमटियों की मदद से लगा दिए।

कंप्यूटरनुमा मशीन पर काम कर रहे पुतले ने की-बोर्ड के जरिए कोई प्रोग्राम चलाया। कुछ ही देर में तन्मय की बेचैनी कम होने लगी। उसकी ठंड भी कम होने लगी और उसने राहत महसूस की। उन बर्फ के पुतलों ने आपस में कुछ बातचीत की और उनमें से एक ने अपनी टोपी का बटन दबाया। लाल बत्ती जली और वह किसी से बात करने लगा।

तन्मय ने कांच के कमरे के चारों ओर नजर दौड़ाई। बाहर धूप नहीं थी। चांदनी रात से कुछ ज्यादा साफ प्रकाश चारों तरफ बिखरा था। जहां तक उसकी नजर जाती थी बर्फ ही बर्फ दिखाई दे रही थी। कोई पेड़-पौधा भी नजर नहीं आ रहा था। आसमान में उड़ते पंछी भी नहीं दिखे। दूर-दूर तक कोई घर भी नहीं। सड़कें तो थीं ही नहीं। उसने देखा कि चार-पांच बर्फ के पुतले तेजी से फिसलते हुए फिर से उसकी तरफ चले आ रहे हैं। उनके साथ कांच की कोई भारी-भरकम मशीन भी फिसलती हुई चली आ रही थी।

तन्मय ने सोचा, यह तो काफी बढ़िया इंतजाम है। टोपी में ही मोबाइल फोन है। गाड़ी और सड़कों की कोई जरूरत ही नहीं। पैरों में चपटी पट्टी वाले जूते पहन कर चाहे जहां फिसलते चले जाओ। भारी से भारी सामान भी लाना हो तो बर्फ पर घसीट लो। न किसी ट्रक की जरूरत न माल गाड़ी की। इन्हें पेट्रोल-डीजल की तो चिंता ही नहीं करनी पड़ती होगी। उसने यह भी गौर किया कि कमरे के फर्श पर भी वे फिसलते हुए चल रहे थे, जबकि फर्श ठोस कांच का बना हुआ था। उस पर बर्फ बिल्कुल नहीं थी। यानी इन जूतों में ही कोई न कोई ऐसी व्यवस्था है जो फिसलने में मदद करती है। तन्मय को उनकी यह व्यवस्था काफी रोमांचक लगी। उसने सोचा, काश हम भी ऐसा ही कर पाते!

वे चारों बर्फ के पुतले कांच के कमरे में मशीन लिए हुए हाजिर हो चुके थे। वहां पहले से उपस्थित पुतलों ने उन्हें कुछ समझाया और वे काम में लग गये। तन्मय के पास लाकर मशीन खड़ी कर दी और उसे चला दिया। अरे यह क्या, यह मशीन है कि मकड़ी। मशीन कांच की लार छोड़ती हुई तन्मय के चारों ओर गोल-गोल घूमने लगी
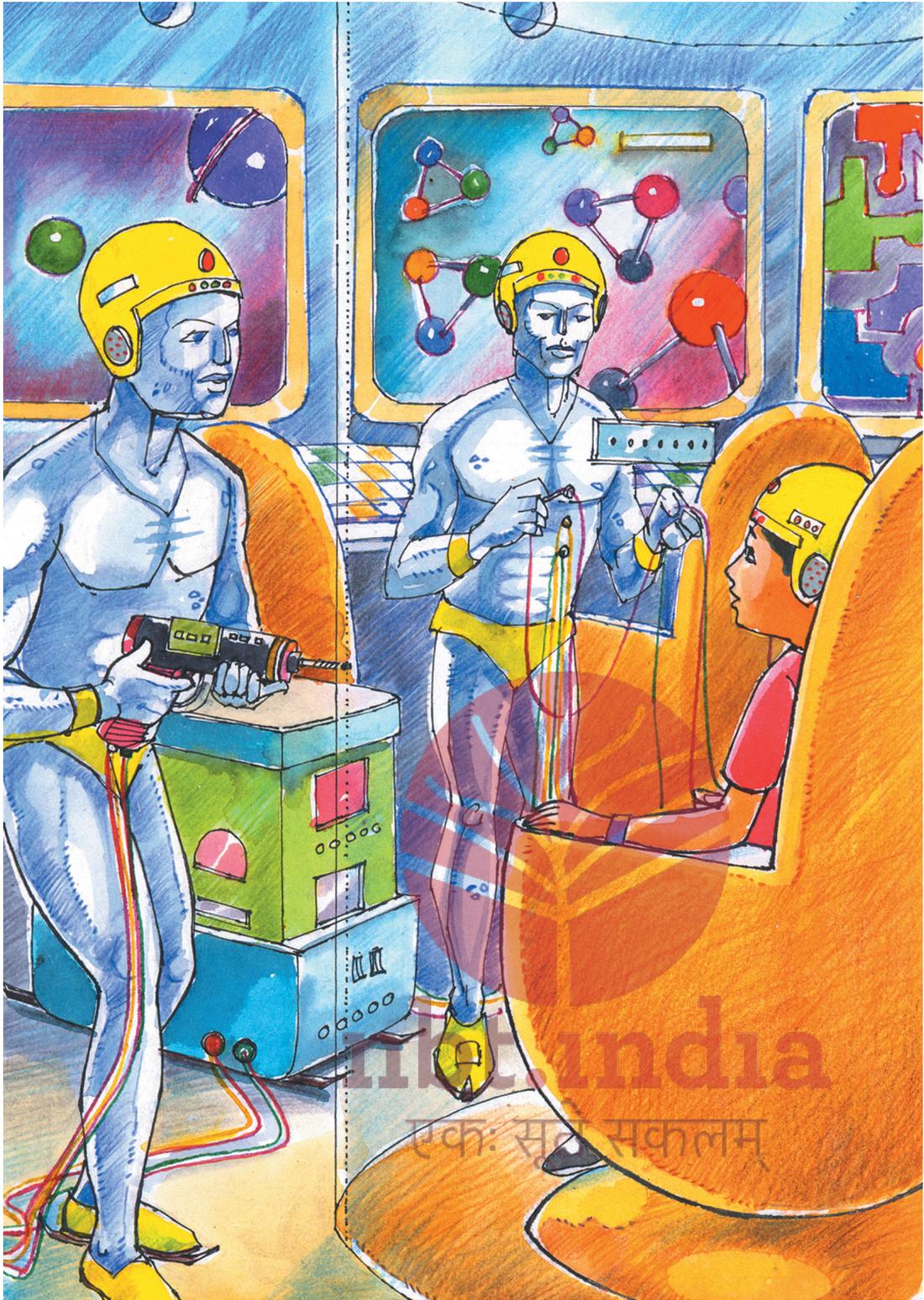
और उसके चारों ओर कांच की दीवार बनने लगी। दस मिनट भी नहीं लगे होंगे कि तन्मय एक कांच के गोल डिब्बे के भीतर कुर्सी, टोप समेत कैद हो चुका था।

मशीन अपना काम करके अलग हट चुकी थी। उनमें से एक पुतले ने ड्रिल मशीन जैसा एक यंत्र उठाया और उस डिब्बे की दीवारों पर कहीं-कहीं छेद करने लगा। दूसरे पुतले ने उन छेदों के जरिए कुछ बटन और तार जोड़ दिए। तीसरे पुतले ने दीवार के एक हिस्से को काट कर दरवाजा बना दिया। उनका काम निपट गया तो वे चारों पुतले फिसलते हुए, मशीन को घसीटते हुए तेजी से वापस चले गये।

पहले वाले पुतलों में से दो लगातार कंप्यूटरनुमा मशीन पर कुछ जानकारी हासिल करने में जुटे थे। वे आपस में कुछ बातें भी करते जा रहे थे, मगर जानकारी हासिल करने की कोशिश में उनकी नजरें दीवार पर लगी स्क्रीन पर टिकी हुई थीं।

उस कांच के डिब्बेनुमा कमरे में बंद होकर तन्मय को काफी आराम महसूस हो रहा था। जिस कुर्सी पर वह बैठा था, वह काफी आरामदेह थी। अब तन्मय को भूख लग आयी थी। वह उन पुतलों से खाना मांगे भी तो कैसे! न तो वे उसकी भाषा समझ पा रहे थे और न ही वह उनकी बातें समझ पा रहा था। दूसरे, जब इन्होंने उसका अपहरण किया है तो वे उसे खाना देंगे इसी बात की क्या गारंटी है। दे देंगे तो उनकी मर्जी, नहीं देना चाहें तो उनकी मर्जी। वह उनका कोई मेहमान तो है नहीं कि सेवा खातिर करेंगे। आसपास इतने सारे तार-वार लगा रखे हैं। उसके शरीर को पेटी से जकड़ रखा है, क्या पता बिजली के झटके देकर उसे परेशान भी करें, तन्मय ने सोचा।

तन्मय मन ही मन खुद को उनकी यातना झेलने के लिए तैयार करने लगा। तभी उसने देखा कि सारे पुतले दीवार पर लगी स्क्रीन पर देख कर खूब जोर-जोर से हंस रहे हैं। उनमें से एक पुतले ने फिर अपने टोप का बटन दबाया, लाल बत्ती जली और उसने किसी से बात की। वह उनकी हरकतें देख रहा था कि तभी बाहर से एक पुतला फिसलता हुआ आया, तन्मय के डिब्बेनुमा कमरे का दरवाजा खोला और अपने साथ में लाई रोबोटनुमा मशीन को उसके पास लगा दिया। पुतले ने मशीन का बटन

दबाया और उसमें से एक हाथ बाहर निकल कर उसके मुंह के बराबर आ गया। तन्मय ने सोचा शायद यह थप्पड़ मारने वाली कोई मशीन होगी। उसके तो दोनों हाथ बंधे हुए हैं, इसलिए वह अपना बचाव भी नहीं कर सकता। तन्मय ने थप्पड़ खाने से बचने के लिए अपनी गर्दन पीछे कर ली। तभी मशीन से दूसरा हाथ निकला और उसने उसकी गर्दन को सहारा देकर पीछे जाने से रोक लिया। पहला आगे बढ़ा हुआ हाथ थोड़ा और आगे बढ़ा और उसने पकड़ी हुई एक शीशी में भरा द्रव तन्मय के मुंह में डाल दिया।



तन्मय समझ गया कि यह खाना खिलाने वाली मशीन है। उसने मुंह में पड़े द्रव

को गले से नीचे उतारते हुए सोचा, अजीब लोग हैं, खाना भी खुद नहीं खा सकते। इसके लिए भी मशीन बना रखी है। उस द्रव का स्वाद कुछ अजीब सा था। तन्मय को पसंद नहीं आया, मगर भूख लगी थी, इसलिए कुछ न मिलने से कुछ मिलना ज्यादा बेहतर था। तन्मय ने सोचा कि मशीन दूसरी शीशी उसके मुंह में डालेगी, इसलिए उसने पहले ही मुंह खोल दिया। मगर यह क्या, मशीन ने अपने दोनों हाथ समेट लिए और पुतले के बटन दबाने पर तन्मय के कमरे से बाहर चली गयी। इसका मतलब अब और कुछ नहीं मिलने वाला। जो मिला, उसी पर संतोष करना पड़ेगा।
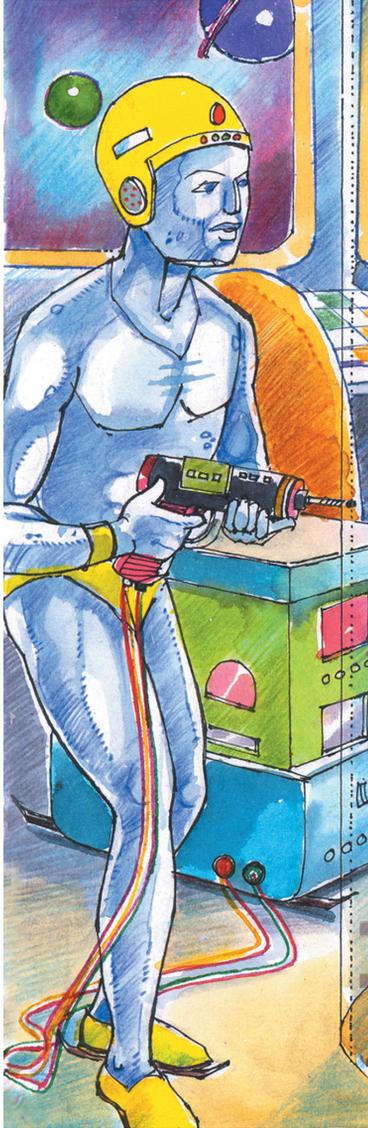
फिर अचानक तन्मय को ध्यान आया कि कहीं इन लोगों ने उसे बेहोशी या नींद की दवा तो नहीं पिलाई है। सोचते होंगे कि यह बेहोश हो जायेगा तो इन्हें परेशान नहीं करेगा या कहीं भागने की कोशिश नहीं कर पायेगा और ये आराम से अपना काम करते रहेंगे। कई अपहरण करने वाले ऐसा भी करते हैं। मगर उस पुलिस वाले अंकल ने बताया था कि ऐसी दवाएं पीने के बाद सिर में चक्कर आने लगता है या थोड़ी देर में नींद आने लगती है। अभी तक तो उसे ऐसा कुछ नहीं हो रहा। शायद थोड़ी देर में असर हो।

तन्मय लगातार उन पुतलों को देखता जा रहा था। वे स्क्रीन पर देख रहे थे और बीच-बीच में अचानक हंस पड़ते थे। तन्मय ने गौर किया जब भी वह उन पुतलों के बारे में कुछ सोचता है तभी वे हंसते हैं। इसका मतलब कि इन लोगों ने जो कंप्यूटरनुमा मशीन से जोड़ कर उसके शरीर के आसपास इतने सारे तार

लगा रखे हैं उनके जरिए वे उसके सोचे हुए को समझ रहे हैं। उसके दिमाग में आने वाली बातें उनके कंप्यूटर के स्क्रीन पर आ जा रही हैं। उसने सोचा, ऐसा मुश्किल नहीं है। हमारे यहां भी ऐसी मशीनें बन गयी हैं जो आदमी के दिमाग में पल रही बातों को दर्ज कर लेती हैं और उन्हें बता देती हैं। तन्मय ने सोचा, अगर ऐसा है तो इनके बारे में कुछ सोचना भी खतरे से खाली नहीं है। मगर दिमाग में उठने वाली बातों को रोके तो कैसे! ये सारी बातें सोचते-सोचते पता नहीं तन्मय को कब नींद आ गयी, उसे पता भी नहीं चला।

# तीन

नींद खुली तो तन्मय ने देखा कि सिर्फ दो पुतले वहां थे। वे कंप्यूटर पर काम करने में जुटे थे। बाकी शायद चले गये थे। उसने छत की ओर देखा। वैसा ही चांदनी रात जैसा प्रकाश चारों ओर फैला था। कहीं-कहीं बादलों के कुछ टुकड़े बिखरे हुए थे। बाकी आसमान साफ था। तन्मय ने सोचा, इनके यहां लगता है दिन और रात अलग-अलग होते ही नहीं। एक-सा ही वातावरण हमेशा बना रहता है। मगर जब चांदनी बिखरी है तो आसमान में कहीं चांद तो दिखना चाहिए। वह भी नहीं दिखाई दे रहा। बाहर दूर-दूर तक कोई पेड़-पौधा या घर दिखाई नहीं दे रहा था। कोई पंछी भी नहीं।

तभी उसे अपने आसपास आवाज सुनाई दी, "लगता है जाग गया है।" तन्मय हैरान हुआ। उसने अपने कमरे में नजरें दौड़ाईं। कमरे की एक दीवार में स्पीकर लगा था। जब वह सोया था उसके पहले तक तो यह नहीं था। लगता है, उसके सो जाने के बाद इन लोगों ने लगाया है, तन्मय ने सोचा। लगता है, जब तक वह सोया था ये लोग उसके मन में चल रही बातों को मशीन के जरिए जानने की कोशिश करते रहे। ...मगर यह उसकी भाषा में आवाज कहां से आ रही है!

स्पीकर से फिर आवाज आयी, "हमने तुम्हारी भाषा की प्रोग्रामिंग कर ली है।

अब जो कुछ भी तुम बोलोगे, उसका हमारी भाषा में अनुवाद हो जायेगा और हमारी भाषा का तुम्हारी भाषा में। इसलिए हम लोग आपस में बातें कर सकते हैं। बस तुम अपने मन में जो कुछ सोचोगे उसे हम अपने कंप्यूटर तरंगों के जरिए जान और समझ सकेंगे। उसकी आवाज नहीं सुनाई देगी।''

तन्मय को इस तकनीक के बारे में सुन कर हैरानी हुई और इस बात की खुशी भी कि वह अपनी बातें अपनी भाषा में उनसे कह सकेगा यह भी जान सकेगा कि उसे यहां क्यों लाए हैं।...मगर जब ये लोग तकनीकी रूप से इतने सक्षम हैं तो इन्होंने उसे इस तरह कुर्सी पर बांध कर क्यों रखा है। वह भागने की कोशिश भी कैसे कर सकता है, तन्मय ने सोचा।

स्पीकर से आवाज आयी, ''तुम्हें बांध कर नहीं रखा गया है। जिस कुर्सी पर तुम बैठे हो, वह हमारी तकनीक का एक हिस्सा है। उस पर से उठते ही तुमसे हमारा संपर्क टूट सकता है। हो सकता है कि तुम हमारी धरती पर चल भी न पाओ।''

अच्छा, इसका मतलब कि वह किसी दूसरे ग्रह पर पहुंच गया है, तन्मय ने सोचा। तन्मय ने पूछा, ''मैं कहां पर हूं?''

''तुम जीरो नाइन ग्रह पर हो,'' स्पीकर से आवाज आयी। कंप्यूटर पर काम कर रहा आदमी तन्मय से बात करने लगा था।

''आपका नाम क्या है?''

''ची-थर्टी टू।''

''यह क्या नाम हुआ भला!''

''हमारे यहां तुम्हारे जैसे नाम नहीं रखे जाते। हमारा कोड ही हमारा नाम होता है। पैदा होते ही यहां हर आदमी का एक कोड तय कर दिया जाता है। वही कोड हमारे कंप्यूटर में फीड होता है। हम जो हेलमेट पहनते हैं उसके जरिए इस ग्रह के किसी भी आदमी से उसका कोड बोल कर संपर्क कर सकते हैं।''

''यह तो काफी अच्छी व्यवस्था है। मगर क्या पूरे ग्रह के लोगों के बारे में पता करना इतना आसान है?''

स्पीकर से हंसने की आवाज आयी, ''इस ग्रह पर तुम्हारे ग्रह जैसी आबादी नहीं है। यहां कुल पौने तीन सौ लोग रहते हैं। वे इस ग्रह के जिस भी कोने में रहते हों, बुलाने पर पल भर में हाजिर हो सकते हैं। किसी के भी पास हम पल भर में पहुंच सकते हैं। मगर हम किसी को भी बेवजह परेशान नहीं करते।''

''आपका प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति कौन है?'' तन्मय ने पूछा।

''हमारे यहां इस तरह की कोई व्यवस्था नहीं है। सभी लोग एक-दूसरे से जुड़े हैं और स्वतंत्र भी। हर आदमी अपने पूरे ग्रह के हितों को ध्यान में रख कर काम करता है, सिर्फ अपने लिए नहीं। इसलिए कोई भी फैसला सबकी राय से किया जाता है। किसी एक की राय न तो थोपी जाती है न किसी एक का शासन माना जाता है। यहां सभी मिलजुल कर काम करते हैं। पूरे ग्रह के सभी आदमी एक ही परिवार के सदस्य हैं।''

''यह तो बहुत अच्छा है। काश हमारे ग्रह पर भी ऐसी व्यवस्था होती। आपका ग्रह तकनीकी रूप से इतना विकसित है, मगर पता नहीं क्यों आज तक हमारी पृथ्वी के लोगों को इसका पता ही नहीं चला। हमने बहुत सारे ग्रहों के बारे में पता लगा लिया है। उन ग्रहों के वातावरण का अध्ययन किया है, लेकिन आपके ग्रह का कहीं कोई जिक्र नहीं मिलता।''

''हमने अपने ग्रह के केंद्र में एक ऐसा उपग्रह सेट किया है जो लगातार इसके चारों ओर घूमता रहता है और बाहर से आने वाले किसी भी संदेश या उपग्रह को इस तक पहुंचने से रोकता है। अगर किसी दूसरे ग्रह का उपग्रह इसके बारे में पता करना चाहे तो वह नहीं कर सकता। उसके पास तक इसकी सूचनाएं नहीं पहुंच सकतीं। हां, अगर हम अपने यान के जरिए दूसरे ग्रह पर जाना चाहें और संपर्क करना चाहें तो उसमें कोई बाधा नहीं आयेगी।''

''ऐसी सुरक्षा-व्यवस्था तो शायद किसी ग्रह के पास नहीं होगी।...क्या आपके यहां धूप नहीं निकलती?''

''नहीं। यहां सूरज नहीं दिखता। बस, हमेशा पूरे ग्रह पर ऐसी ही एक जैसी रोशनी बनी रहती है। यहां रात और दिन का कोई बंटवारा नहीं है।''
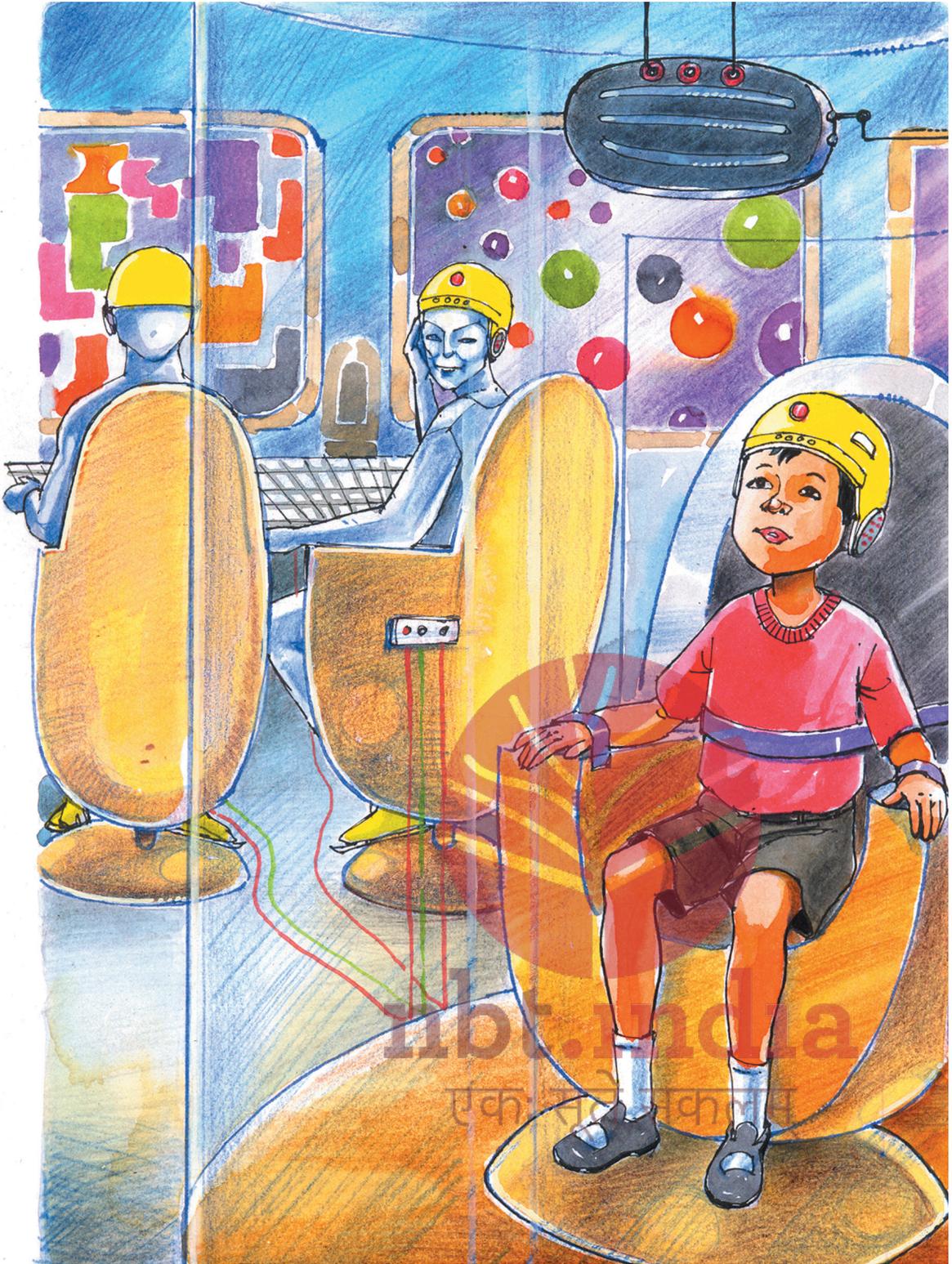
‘‘भूख लग रही है। क्या आपके यहां कुछ खाने को मिल सकता है?’’

‘‘बिल्कुल। थोड़ा इंतजार करो।’’ कंप्यूटर वाले आदमी ने अपने हेलमेट का बटन दबाया। लाल बत्ती जली, उसने किसी से बात की और फिर कंप्यूटर की तरफ मुड़ा। तन्मय ने बाहर नजरें दौड़ाईं। वही रोबोटनुमा मशीन लिए एक बर्फ का आदमी फिर से हाजिर हो गया, जो पहले खाने के नाम पर एक शीशी द्रव पिला गया था। तन्मय समझ गया कि इनके यहां खाने के नाम पर बस एक शीशी द्रव मिल सकता है।

तन्मय के कमरे का दरवाजा खुला। वही मशीन फिर से अंदर आयी। उसने अपने हाथ फैलाए और पहले की तरह ही एक शीशी द्रव उसके मुंह में डाल कर वापस चली गयी।

तन्मय ने पूछा, ‘‘क्या आपके यहां खाने के लिए ब्रेड, बटर, दूध, चाय वगैरह कुछ नहीं मिलता?’’

‘‘नहीं। यही हमारा भोजन है। एक शीशी पीने के बाद तुम्हें काफी देर तक भूख नहीं लगेगी। शरीर में ताजगी और फुर्ती बनी रहेगी।’’

‘‘आपके यहां अनाज नहीं उगता?’’

‘‘नहीं। बर्फ पर कुछ भी नहीं उगता। क्या तुम्हारे यहां इस तरह का भोजन नहीं मिलता?’’

‘‘नहीं। हम अनाज, फल, दूध, सब्जियां वगैरह खाते हैं। आपके जैसा भोजन तो हम टॉनिक या किसी दवा के रूप में लेते हैं।’’...तन्मय ने पूछा, ‘‘मुझे यहां क्यों लाया गया है?’’

‘‘हम काफी समय से तुम्हारे ग्रह के बारे में शोध कर रहे हैं। हमारे ग्रह को तुम्हारे ग्रह से काफी खतरा है। कई बार हम तुम्हारे ग्रह पर अपना यान भेज चुके हैं। दो-चार बार वहां के भालू, बकरी, खरगोश जैसे जीव हमारे यान में बैठ कर यहां तक आए भी, मगर उनसे हम कुछ भी हासिल नहीं कर सके। उन्हें जिंदा बचाए रखना हमारे लिए मुश्किल हो गया।’’

‘‘हमारे ग्रह से आपके ग्रह को भला किस तरह का खतरा हो सकता है?’’

"तुम्हारे ग्रह से आने वाली गैसें हमारे ग्रह के तापमान को बढ़ा रही हैं। इसलिए हमारे अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। हम शून्य से अधिक तापमान पर जिंदा नहीं रह सकते। हमारे ग्रह की बर्फ पिघलने लगी है। अगर यह बर्फ पिघल गयी तो तुम्हारे ग्रह की तरह यहां भी वनस्पतियां उग आयेगी, वैसे ही जीव पैदा होंगे, मगर हमारा अस्तित्व नष्ट हो जायेगा। हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता और सैकड़ों साल की मेहनत से तैयार तकनीक सब कुछ नष्ट हो जायेगा। हम चाहते हैं कि तुम इसे रोको।"

"तापमान बढ़ने से तो हम भी परेशान हैं। हमारा सारा ऋतु-चक्र गड़बड़ा गया है। बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए हमारे यहां काफी प्रयास चल रहे हैं, मगर ज्यादा सफलता हाथ नहीं लग रही।"

"तुम इसे रोकते क्यों नहीं!"

"मैं अकेले क्या कर सकता हूं। आपके ग्रह की तरह हमारे ग्रह पर दो-तीन सौ लोग तो रहते नहीं हैं। वहां कई अरब लोग हैं। हमारी पृथ्वी कई देशों में बंटी है। हर देश में अपने तरीके का शासन है, उनके अपने-अपने कानून हैं। सभी एक कानून या एक आदमी के शासन से नहीं चलते।"

"मगर सबसे बात करनी हो तो कैसे की जा सकती है?"

"जब कोई पूरी दुनिया के हित से जुड़ा मामला हो तो सभी देशों का एक संगठन है, जिसे संयुक्त राष्ट्र कहते हैं। उसके
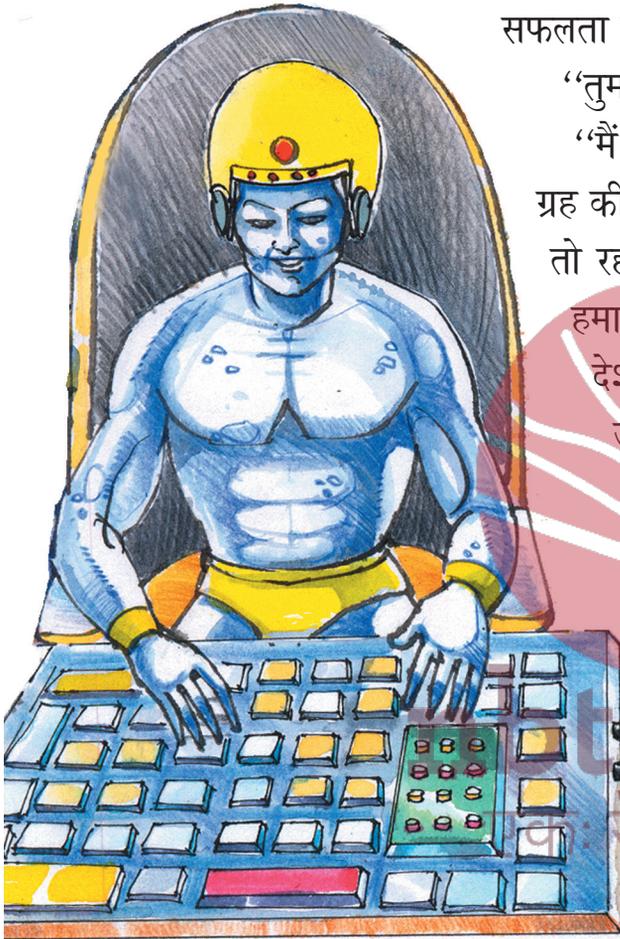
जरिए बात की जा सकती है।"

"तुम उससे कहो कि हमारे ग्रह को पहुंचने वाले खतरों को रोके।"

"मैं यह काम नहीं कर सकता।"

"क्यों।"

"इसके लिए किसी राष्ट्र का अध्यक्ष ही पहल कर सकता है।"

"तो तुम उससे इस बारे में बात करो।"

"मैं वह भी नहीं कर सकता। हां, मेरे पापा इसमें आपकी कुछ मदद कर सकते हैं। वे एक मंत्रालय में अधिकारी हैं और अपने मंत्री के जरिए प्रधानमंत्री तक बात को पहुंचा सकते हैं।"

"उनसे बात करो कि हम तुम्हारी धरती के ऊपर एक सेटेलाइट छतरी लगाना चाहते हैं ताकि वहां से जो भी गैसें ओजोन परत को छेद कर हमारे ग्रह तक पहुंच रही हैं, वह उन्हें पहले ही अवशोषित कर ले। अगर वे चाहेंगे तो हम तुम्हारे ग्रह वालों को रासायनिक गैसों को पैदा होने से रोकने की तकनीक भी बता सकते हैं।"

"इससे अच्छी बात तो हो ही नहीं सकती। मैं तो पहले यह सोच रहा था कि आप लोग मेरा अपहरण कर फिरौती मांगेंगे।"

स्पीकर से दोनों पुतलों के जोर-जोर से हंसने की आवाज आयी।

"अच्छा, मेरे पापा को फोन मिला
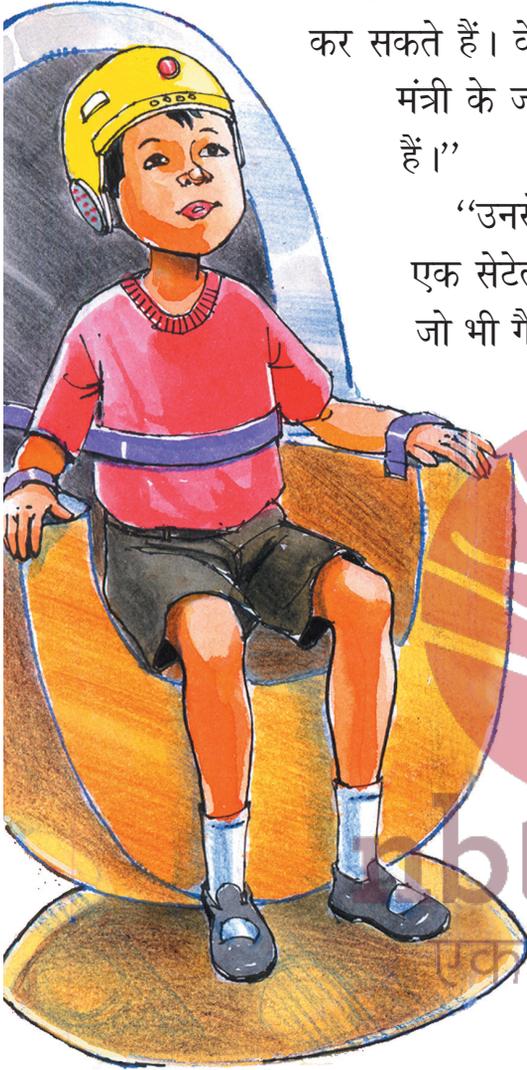
दीजिए, मैं उनसे बात करना चाहता हूं। पाता नहीं उन्हें यह मालूम भी है या नहीं कि मैं किसी और ग्रह पर पहुंच गया हूं। अब तक तो पापा ने मेरे अपहरण की रिपोर्ट पुलिस में भी दर्ज करा दी होगी। आपके यहां तो दिन रात का कोई चक्कर ही नहीं है कि मुझे पता चले कि मैं कितने दिन से यहां हूं। उधर हमारे देश की पुलिस मुझे ढूंढ़ने में परेशान होगी। फोन पर बात हो जायेगी तो वे निश्चिंत हो जायेंगे।''

''तुम अभी उनसे फोन पर बात नहीं कर सकते।''

''क्यों?''

''क्योंकि हमारे पास अभी इस तरह की सुविधा नहीं है कि हम दूसरे ग्रह के लोगों से संपर्क कर सकें। तुम हमारी मदद करो तो हम इसकी तकनीक कुछ घंटों में जरूर विकसित करने की कोशिश करेंगे।''
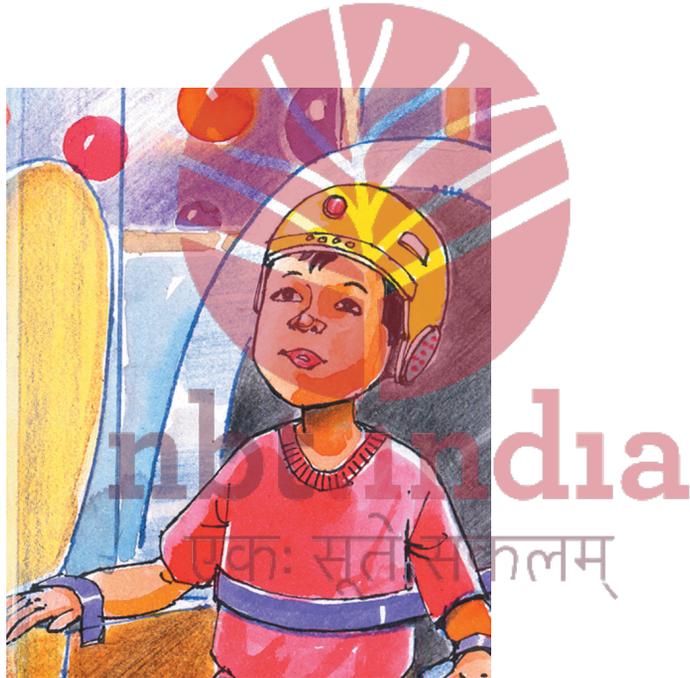
# चार

कंप्यूटर पर काम कर रही लड़की ने अपने हेलमेट का बटन दबाया, लाल बत्ती जली और उसने किसी से बात की। तन्मय समझ गया कि कुछ तकनीशियनों को बुलाने के लिए संपर्क किया गया है। उसे खुशी हुई कि वह अपने मम्मी-पापा से जल्दी ही संपर्क कर सकेगा और इस ग्रह से उसे मुक्ति मिलने की संभावना बनेगी।

थोड़ी ही देर में पांच और बर्फ के आदमी वहां फिसलते हुए आ पहुंचे। उन्होंने आपस में कुछ देर बातचीत की और एक व्यक्ति ने स्पीकर के जरिए तन्मय से बात करनी शुरू की।

''तुम्हारे ग्रह पर किसी से संपर्क करने के लिए क्या जरिया हो सकता है?''

''फोन करके बात की जा सकती है या ई-मेल किया जा सकता है।'' तन्मय ने बताया।

''फोन से संपर्क करने की तकनीक अभी सिर्फ हमने अपने ग्रह के लोगों के लिए विकसित की है। जिस सेटेलाइट के जरिए हम संपर्क करते हैं उसकी तरंगें दूसरे ग्रह तक नहीं पहुंच सकतीं। दूसरे, फोन डायल करने की वैसी तकनीक हमारे पास नहीं है, जिसका तुम्हारे यहां इस्तेमाल किया जाता है। तुम्हारे यहां नंबर डायल करने पड़ते हैं

जबकि हमारे यहां कोड बोलने से फोन काम करता है।''

''तो फिर ई-मेल तो कर सकते हैं।'' तन्मय ने सलाह दी।

''हमारी लिपि अलग है, इसलिए तुम्हारे ग्रह तक लिखित संदेश भेजना आसान नहीं है। उसके लिए हमें अलग से सॉफ्टवेयर तैयार करना पड़ेगा, जिसके लिए काफी शोध और समय की जरूरत है।''

''तो फिर मेरी आवाज को मेल किया जा सकता है।'' तन्मय ने दूसरा उपाय सुझाया।

उसके सुझाव पर तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी। उन बर्फ के आदमियों ने आपस में कुछ देर बात की फिर स्पीकर से आवाज आयी, ''इसके लिए कोशिश की जा सकती है। मगर इसके लिए भी हमें काफी मेहनत करनी पड़ेगी।''

''तो आप लोग ऐसा क्यों नहीं करते कि मुझे वापस भेज दीजिए, अपने ग्रह का नक्शा और दूसरी जानकारियां मुझे दे दीजिए। मैं वहां जाकर आपकी समस्या के बारे में बात करूंगा और जैसे ही कुछ कर पाने की गुंजाइश बनेगी आपको संदेश भेज दूंगा।''

''यह तो कतई नहीं हो सकता। हम दूसरे ग्रह के लोगों को अपने बारे में जानकारी नहीं दे सकते। वैसे ही, तुम लोग अपने ग्रह पर बढ़ती समस्याओं से परेशान हो और रहने के लिए दूसरे ग्रह पर तुम्हारी निगाहें हैं। अपने बारे में जानकारी देकर हम खतरा मोल नहीं ले सकते।''

''तो क्या मैं अब आप लोगों के साथ ही रहूंगा?'' तन्मय को भय लगा।

''नहीं। हम तुम्हें ज्यादा समय अपने पास नहीं रख सकते। जैसे ही तुम्हारे ग्रह से हमारी बातचीत हो जायेगी हम तुम्हें वापस छोड़ देंगे। तब तक तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है।''

तन्मय सोचने लगा कि पता नहीं कब तक इन लोगों का हमारी पृथ्वी के लोगों से संपर्क हो पायेगा। पता नहीं कब तक पापा को खबर मिल पायेगी। इनके पास तो न फोन करने की तकनीक है न मेल भेजने की। और कोई उपाय समझ में नहीं आ रहा। वह क्या करे?

तभी उसने देखा कि कंप्यूटर पर काम करने वाले बर्फ के आदमियों ने वहां बाकी उपस्थित आदमियों से कुछ बातचीत शुरू कर दी थी। वे सभी काफी गंभीर थे, मगर उनके चेहरे के भावों से पता चल रहा था कि उन्होंने कोई उपाय ढूंढ़ लिया है।

स्पीकर से आवाज आयी, ''हम तुम्हारी आवाज को तुम्हारे ग्रह पर भेजने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन इसमें थोड़ा वक्त लगेगा। इसके लिए हमें एक सेटेलाइट लगा अपना यान तुम्हारे ग्रह पर भेजना पड़ेगा। उसके जरिए तुम्हारी आवाज को किसी इंटरनेट फ्रिक्वेंसी पर पहुंचाने की कोशिश करेंगे। इसके लिए तुम अपना जो भी संदेश देना चाहो, बोल कर रिकॉर्ड कर दो। जब हम निर्देश दें तो तुम बोलना शुरू करना।''

तन्मय ने सोचा, चलो कोई तो उपाय हाथ लगा।

तभी स्पीकर से आवाज आयी, ''अपना संदेश रिकॉर्ड कराओ।''

तन्मय तो जैसे पहले से तैयार था। उसने बोलना शुरू किया, ''पापा, मैं जीरो नाइन नाम के एक ग्रह पर पहुंच चुका हूं। एक कछुएनुमा यान में कैद होकर यहां पहुंचा हूं। यहां पर चारों तरफ सिर्फ बर्फ ही बर्फ है और इस ग्रह पर केवल बर्फ के आदमी रहते हैं। इन्होंने मुझे काफी अच्छे तरीके से रखा है, इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है। इन लोगों का कहना है कि हमारी पृथ्वी पर बढ़ते प्रदूषण का असर इनके ग्रह पर पड़ रहा है। इनके ग्रह का तापमान बढ़ रहा है जिससे यहां की बर्फ पिघलनी शुरू हो गयी है। अगर ऐसे ही तापमान बढ़ता रहा तो इनका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा, क्योंकि ये शून्य से अधिक तापमान पर जिंदा नहीं रह सकते। ये चाहते हैं कि पृथ्वी के ऊपर एक सेटेलाइट छतरी लगाई जाये जो सारे प्रदूषण और पृथ्वी से उठने वाली जहरीली गैसों को अवशोषित कर ले। इसके लिए आप प्रधानमंत्री या पर्यावरण मंत्री से जल्दी बात कीजिए। जब तक इन्हें कोई सार्थक आश्वासन नहीं मिलेगा तब तक ये लोग मुझे वापस नहीं भेजेंगे। यहां के बारे में बाकी बातें लौट कर बताऊंगा।''



जब तक तन्मय अपना संदेश रिकॉर्ड करवाता, तब तक वही कछुआनुमा यान
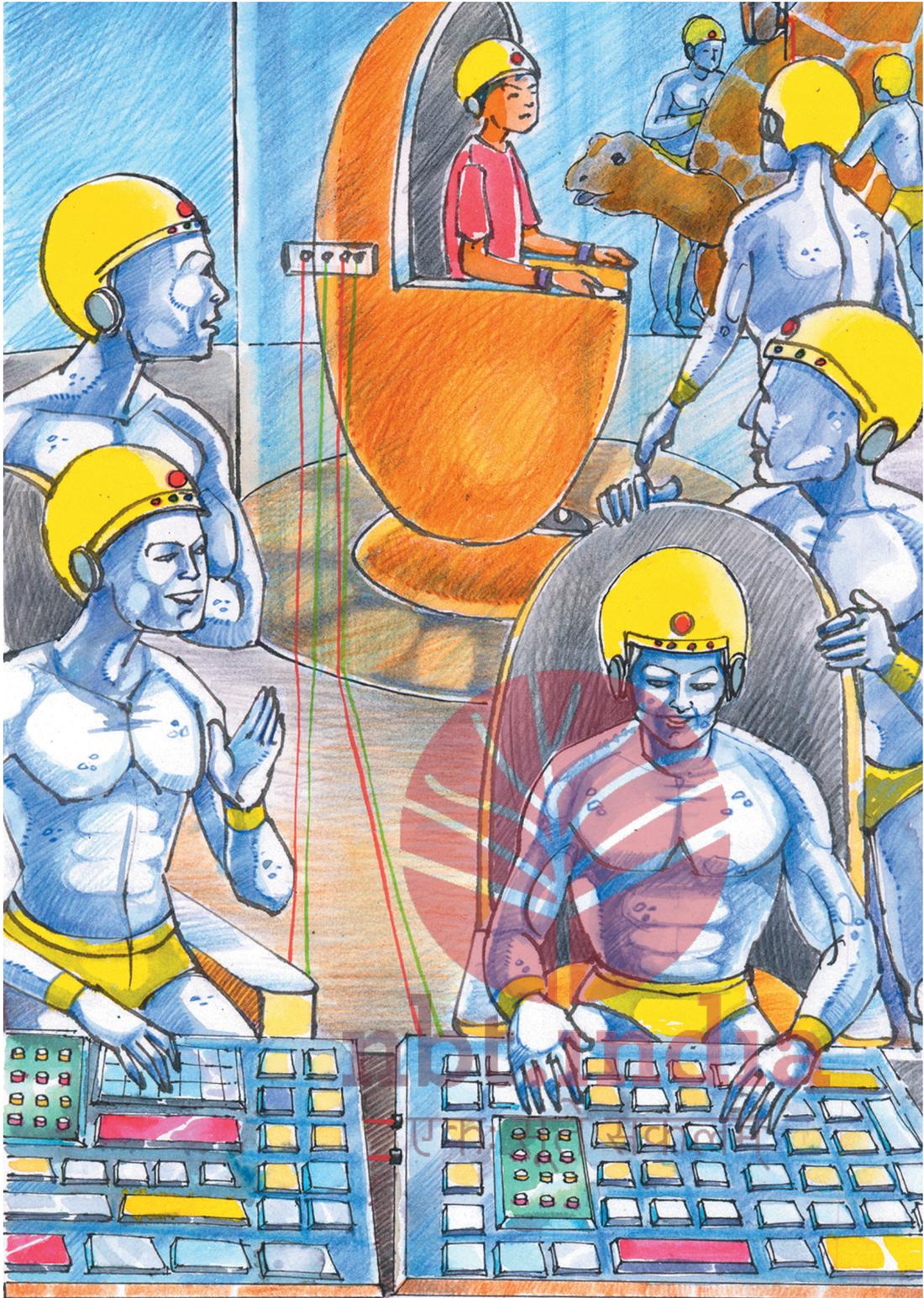
बाहर आकर उपस्थित हो गया था। दो बर्फ के आदमी उसमें कोई यंत्र लगाने में जुट गये थे। यंत्र लग जाने के बाद उन्होंने कंप्यूटर पर कुछ करना शुरू किया। पलक झपकते ही वह कछुआनुमा यान बिना कोई आवाज किए उड़ गया। वह कहां गया, तन्मय को पता ही नहीं चल पाया। सामने दीवार पर लगी स्क्रीन पर उसकी तस्वीर जरूर दिखाई दे रही थी जिससे पता चल रहा था कि वह किस दिशा में जा रहा है। कंप्यूटर पर काम करने वाला आदमी उसे कंप्यूटर के जरिए मोड़ रहा था और एक नक्शे पर निशान लगा कर उसे उसी दिशा में जाने का निर्देश दे रहा था।

थोड़ी देर में यान निश्चित लक्ष्य पर पहुंच गया। कंप्यूटर स्क्रीन पर संदेश आने शुरू हो गये। सभी बर्फ के आदमी कंप्यूटर स्क्रीन पर ध्यान लगाए खड़े हो गये थे। कंप्यूटर पर काम करने वाला आदमी लगातार यान में लगे सेटेलाइट से मिलने वाले संदेशों का अध्ययन कर रहा था।

थोड़ी देर बाद स्पीकर से आवाज आयी, ''तुम्हारे ग्रह के कंप्यूटर नेट से संपर्क जुड़ गया है। तुम अपना संदेश जिस पोर्टल के जरिए भेजना चाहते हो उसका नाम बोलो।''

तन्मय ने अपने पापा का मेल आईडी बोल दिया।

कंप्यूटर स्क्रीन पर स्कैन करते समय जिस तरह की रेखाएं चलती हैं वैसी ही रेखाएं उभरने लगीं। कुछ देर में वह प्रक्रिया पूरी हो गयी। कंप्यूटर पर काम करने वाले आदमियों के चेहरे पर खुशी की चमक उभर आयी। स्पीकर से तन्मय को संदेश दिया गया कि उसका संदेश सही जगह पर पहुंचा दिया गया है, अब उधर से आने वाले संदेश का इंतजार किया जा रहा है।

तन्मय ने सोचा कि पता नहीं पापा कब अपना मेल खोलेंगे और कब इसका जवाब देंगे। वैसे तो जब वे दफ्तर में होते हैं तो मेल खुली ही रखते हैं और हर मेल का जवाब तुरंत देते हैं। लेकिन यह भी तो पता नहीं कि हमारे देश में इस समय रात है कि दिन। पता नहीं पापा दफ्तर जा भी रहे हैं कि नहीं। मेरे गायब होने के बाद कहीं उन्होंने छुट्टी न ले ली हो।

तभी स्पीकर से आवाज आयी कि तुम्हारे ग्रह को संदेश मिल गया है। वहां संदेश रिकॉर्ड हो रहा है। थोड़ी देर में हमें मिल जायेगा।

चलो यह तो बहुत अच्छा हुआ। इसका मतलब कि पापा ने मेल खोल रखी थी। तन्मय खुश हो गया।

थोड़ी देर बाद उसके पापा की वाइसमेल उसे मिली। स्पीकर के जरिए उसे सुनाया गया। उन्होंने कहा था, "बेटा हम तुम्हारे गायब होने को लेकर काफी परेशान थे। अब हमारी चिंता दूर हो गयी है। मैं तुरंत प्रधानमंत्री जी से बात करने की कोशिश करता हूं। उन लोगों से कहो वे हमसे संपर्क बनाए रखें। मैं तुम्हें हर पल की जानकारी दूंगा। उन लोगों की परेशानी दूर करने की पूरी कोशिश की जायेगी।"

कंप्यूटर पर निगाह लगाए बर्फ के आदमियों के चेहरे भी खिल उठे थे। अब वे अगले संदेश के इंतजार में आश्वस्त होकर बैठ गये थे।

करीब घंटे भर बाद फिर उसके पापा का संदेश आया कि प्रधानमंत्री जी जीरो नाइन ग्रह के लोगों की मांगों पर विचार करने को तैयार हैं। वे नासा और संयुक्त राष्ट्र महासचिव से तुरंत इस बारे में बात करने जा रहे हैं। तुम्हें थोड़ी देर और इंतजार करना होगा। एक-दो घंटे में कोई सकारात्मक फैसला कर लिया जायेगा।

तन्मय पापा के अगले संदेश का इंतजार करने लगा था। करीब डेढ़ घंटे बाद संदेश आया कि नासा से उनके सेटेलाइट का संपर्क जुड़ गया है। अगर जीरो नाइन ग्रह के लोगों ने अपने सेटेलाइट को पृथ्वी के संपर्क से नहीं हटाया तो उनसे सीधे बातचीत की जा
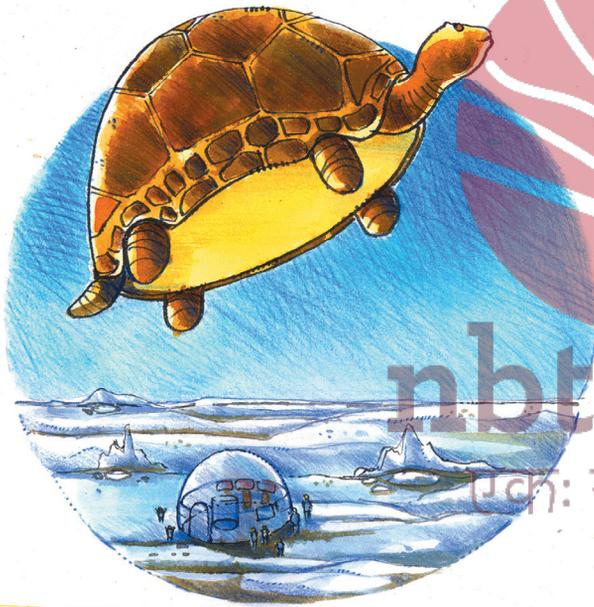
सकती है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव इस ग्रह के लोगों के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए सभी सदस्य देशों से सलाह करके जल्दी ही कोई फैसला कर लेंगे। तुम इन लोगों से कहो वे तुम्हें हमारे पास भेज दें। हम लगातार उनके संपर्क बनाए रखेंगे। उन्हें जो भी बात करनी है सीधे राष्ट्रमंडल देशों के राष्ट्राध्यक्षों से कर सकते हैं।

इस संदेश को बर्फ के आदमियों ने भी सुन लिया था। उन्होंने आपस में सलाह-मशविरा किया और एक मत हो गये। स्पीकर से आवाज आयी, ''थोड़ी देर में हम तुम्हें पृथ्वी पर छोड़ देंगे। तुम्हारे लिए दूसरा यान मंगा लिया गया है।''

थोड़ी देर में कछुआनुमा एक दूसरा यान बाहर उपस्थित हो गया था। तन्मय को उसके कांच के डिब्बेनुमा कमरे से बाहर निकाला गया और उस यान में सवार करा दिया गया। तन्मय काफी थका था, लेकिन मम्मी-पापा से मिल पाने की खुशी में उसे नींद नहीं आयी। एक इतने सुंदर ग्रह की यात्रा करने और इतनी सारी जानकारियां हासिल का उत्साह अलग था।

उसके सोचने का क्रम चल ही रहा था कि अचानक कछुए का कवच खुला। कुर्सी थोड़ी ऊपर हुई और उसकी बेल्ट खुल गयी। तन्मय जैसे ही बाहर निकला यान पलक झपकते गायब हो गया।

चंदू प्रेस, दिल्ली-110092 द्वारा मुद्रित